MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-31, Vol-09 July to Sept. 2019

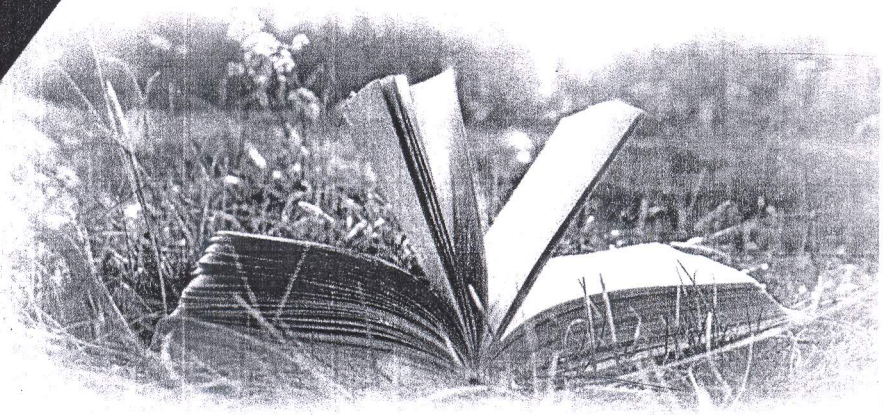

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
International Multilingual Research Journal

13) निलंगा परिसरातील कृषिविधी गीताचे स्वरूप
डॉ.कांत जाधव, जि.लातूर ||64

14) गेटीयरची समस्या आणि ज्ञानाची अव्याख्येयता (Gettier Problem and indefinable ...
प्रा. मोनालिसा अरुण खानोरकर, लातूर ||68

15) शेतक-यांच्या दु:खाचे चित्रण करणारी मराठी ग्रामीण कादंबरी : 'रिक्त-अतिरिक्त'
प्रा. डॉ. मोरे संगीता दत्ताजी, जि.बीड ||72

16) मांडुक्योपनिषदातील ओंकाराचे मानवी जीवनातील महत्त्व
कीर्ती मुकुंद पालटकर ||74

17) सामाजिक कायद्यातून समाज कल्याण
प्रा. डॉ. विद्या मोहनलाल पटवारी, जालना ||76

18) अंबादेवी मंदिर प्रवेश सत्याग्रहात डॉ.पंजाबराव देशमुखांची भूमिका
डॉ. सोमवंशी एस. आर., जि.लातूर ||81

19) व्यवसाय क्षेत्रातील व्यवसायाचा 'आकार किंवा आकारमान'
प्रा. डॉ. नितीन भटू सोनगिरकर, नाशिक ||85

20) महिला आणि मानवी अधिकार
प्रा. डॉ. तांदळे एस. के., जि.बीड ||85

21) पंडिता रमाबाई यांचे समाजातील स्थान
डॉ. श्री. निळकंठ रामचंद्र व्यापारी, जि. ठाणे ||95

22) हिन्दी नाटक और रंगमंच की सर्जनात्मक उपलब्धि—'आषाढ़ का एक दिन'
डॉ० बालेन्द्र सिंह यादव, रायबरेली (उत्तर प्रदेश) ||97

23) मुक्तिबोध की रचनाओं में राष्ट्रवादी दृष्टि
डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल, खड़गपुर ||102

24) भारत की प्राणवायु है हिन्दी
प्रा. डॉ. आनंद रणजीत बक्षी, जि. अमरावती, महाराष्ट्र ||105

25) भारतीय समाजिक चिंतन एवं संस्थायें एक समाजिकशास्त्रीय अध्ययन
DR. Anirudh Chandra Basu, Hazaribag, Jharkhand ||107

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

24

भारत की प्राणवायु है हिन्दी

प्रा. डॉ. आनंद रणजीत बक्षी
कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय चिखलदरा,
जि. अमरावती, महाराष्ट्र

'हिन्दी चीरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया !''— **डॉ. राजेंद्र प्रसाद**

हिन्दी भाषा के उद्भव, विकास की बात न करते हुए हिन्दी को जो कमतर बताकर अंग्रेजी के प्रभुत्व की बाज की जाती है, उसकी ही बात करते है, हिन्दी के विशाल क्षेत्र की बात करते है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणि है। अकेले मनुष्य न तो रह सकता है न जी सकता है। उसे समाज के साथ, समाज के बीच रहने की आदत है। न केवल मनुष्य बल्कि सभी जीव अपनी जाति के साथ रह सकता है। और मनुष्यों को अपने विचारो के आदान — प्रदान के लिए भाषा की आवश्यकता पड़ती है। भारत देश में सबसे ज्यादा बोली जानेवाली भाषा है हिन्दी अपनी जनशक्ति के कारण ही इस भाषा ने लंबी चर्चा के बाद स्वतंत्र संघ के राजभाषा का स्थान प्राप्त किया। किसी भी भाषा को महत्व दिलाने में चार बातें सहायक होती है। पहला बोलणे वालों की संख्या, दुसरा उस भाषा में कितना साहित्य सृजन हुआ, तीसरा वह देश, प्रदेश, भूभाग जहॉ की वह भाषा है, वहॉ की सरकार का उसके साथ बर्ताव कैसा है। चौथी और सबसे महत्वपूर्ण बात उस भाषा को बोलने वालों का अपनी भाषा के प्रति कितना प्रेम हैं। ये चारों चीजे किसी भाषा के अस्तित्व के लिये आवश्यक है।

देखा जाए तो हिन्दी बोलणे वालों की संख्या और इसका क्षेत्र अधिक हैं। हिन्दी बोलने वाले पूरी दुनिया में फैले हुए हैं। हिन्दी भारत, नेपाल, इन्डोनेशिया, मलेशिया, सुरीनाम, फिजी, गुयाना, मारिशस, ट्रिनिडाड, टोबेगो और अरब अमीरात जैसे अनेक देशों मे बोली जाती है फिर भी विडम्बना यह है कि आज तक इसे अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का दर्जा नही मिल पाय है। इसका प्रमुख कारण भारतीयों में संकल्प की कमी है। अगर हम अपनी भाषा को अपने ही घर में नहीं बोल सकते तो इसे विश्व भाषा का दर्जा क्या दिलवायेंगे।

भारत में बोली जानेवाली हिन्दी ही एकमात्र भाषा ऐसी है जो भारत को उत्तर से दक्षिण, पुरब से पश्चिम तक एक सूत्र में बांधने का काम हिन्दी करती है। इसी सत्य को पहचानते हुए गांधीजी ने कांग्रेस अधिवेशन की कार्यवाही केवल हिन्दी में करने की बात कही थी, ताकि पूरे राष्ट्र में कांग्रेस का संदेश पहुंच सके। जो लोग हिन्दी को कमतर आंकने की कोशिश करते हैं। उन्हें समझ लेना चाहिये कि हिन्दी भाषा आज विश्व की नंबर एक भाषा है। नये सर्वेक्षण के अनुसार दुनिया में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी अब क्रमांक १ पर है। डॉ. जयंतीप्रसाद नौटियाल ने 'भाषा शोध अध्ययन — २००५' में लिखा है कि विश्व में हिन्दी जानने वालो की संख्या १ अरब २ करोड २५ लाख १० हजार ३५२ है। विश्व के कई शक्तिशाली देश अंग्रेजी भाषा को श्रेष्ठतम सिध्द करने का प्रयास किया, लेकिन जो भाषा केवल अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और न्युजीलैंड में सिर्फ कुछ करोड लोगो व्दारा बोली जाए वह श्रेष्ठ कैसे सिध्द हुई । आश्चर्य तब होता है जब हमारे ही देश के कुछ बुध्दिजीवी अंग्रेजी के बढते वर्चस्व के समकक्ष समर्पण करते हुए अंग्रेजी को विश्वभाषा बताते हैं। उनका मानना है कि हम अंग्रेजी के बिना प्रगती नहीं कर सकते, यह उपकी अज्ञानता या भोलापन है।

विश्वपटल पर चीन, जर्मन, जपान, रूस, अमेरिका या कुछ विकासमान देशों में हिन्दी विश्वविद्यालय में पढाई जाती है। उसके पीछे है, सवा अरब की जनसंख्या वाला बाजार चीनी, जपानी, अमरीकी, सामानों से लदा भारत का बाजार हिन्दी का सहारा लेकर ही ग्रसा जा सकता है। हिन्दी के सिर पर

पैर रखकर अंग्रेजी की वकालत करने में हमें शर्म आनी चाहिये। टि. वी., फिल्म, रेडियो और समाचार पत्रों से हिन्दी को विश्व में अच्छा सम्मान मिला है लेकिन यह देखकर दुख होता है कि इन प्रचार माध्यमों के लोकप्रिय सितारे साक्षात्कार के समय अक्सर अंग्रेजी ही बोलते हैं। जबभी हम देशप्रेम या साहित्य सेवा की बात करते है तो अंग्रेजी में बोलते है और समझते हैं कि बहुत अच्छा और बडा काम कर रहे हैं। हमारे देश के बुध्दिजीवी कहते हैं कि हिन्दी भाषा विचारों को अभिव्यक्त करने में सक्षम नहीं है और इसलिये इसका व्यापक उपयोग नही हो सकता। इस बयान से उनकी हीनभावना और अशिया ही झलकती है। किसी भी भाषा का कितना अच्छा और व्यापक प्रयोग हो सकता है यह उस भाषा पर नही उस भाषा के जानने वाले पर निर्भर करता है। अगर हम अपनी राष्ट्रभाषा पढ लिख समझ कर उसका व्यापक उपयोग नहीं कर सकते तो यह भाषा का नहीं हमारा दोष है।

अंग्रेजी का केन्द्र कहलाने वाले ब्रिटेन में कई क्षेत्र ऐसे है जहाँ आज अंग्रेजी बोली ही नही जाती। ब्रिटेन में वेल्स, स्कॉटिश, आयरीश भाषाओं ने सदियों के संघर्ष के बाद अपने क्षेत्रों में अंगेजी को अपदस्थ कर दिया है। ऐसी ही दशा वियतनाम, जपान और चीन में बसे अमेरिकियों की है। उनमे से कोई अंग्रेजी की संख्या बल के आधार पर हिन्दी को चुनौती दे, यह बात ही हास्यास्पद है। अकेले भारत में ८० करोड से अधिक लोग हिन्दी बोलते, लिखते और प्रयोग करते दिखाई देत है भारत के पडोसी देश पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, तिब्बत, अफगानिस्तान और मध्य एशियाई देशों मे लाखो हिन्दी का उपयोग करते दिखाई देते है। विश्वभर में तिन करोड से अधिक परिवार हिन्दी बोलते है। हिन्दी का मूल्यांकन करने पर हमें दिखाई देता है कि विश्व के ७५देशों में हिन्दी अपना स्थान बना चुकी है। ११० से भी अधिक विश्वविद्यालयों में और संस्थानो में हिन्दी का अध्ययन — अध्यापन होता है। विश्व में जहाँ भी भारतीय मूल के निवासी हैं वहाँ किसी न किसी रूप में हिन्दी राजभाषा, सहभाषा, संस्कार की भाषा शास्त्रीय भाषा की हैसियत से विद्यमान हैं। संस्कृत की श्रेष्ठपुत्री हिन्दी विश्व की सर्वाधिक सपन्न भाषाओं में से एक मानी जाती है। अनेक विदेशी विव्दानों ने प्रवासी भारतीय के व्दारा बोली जाने वाली हिन्दी की शैलियों पर विभिन्न कोण पर काम किया। रोडनेबॉक का फिजी — हिन्दी व्याकरण कोर्स, सूजन हाबर्स का फिजी — हिन्दी अंग्रेजी तथा फिजी — हिन्दी कोर्स इस दिशा में किया प्रेरक प्रयास हैं। हिन्दी भाषा अध्ययन की विदेशी परम्परा अति प्राचीन है। यही कारण है कि हिन्दी भाषा अध्ययन और व्याकरण लेखन की परम्परा सत्रहवी शताब्दी के अन्तिम दशक में शुरू हुई। हिन्दी भाषा का पहला व्याकरण जान जेसुआ कैरबिद का लिखा व्याकरण हैं। जिसका सर्व प्रथम उल्लेख विशुजी ने अपने ग्रन्थ 'ग्राममतिका हिन्दुस्ताानिका' में किया है। यह किताब ई. स. १६७५ के आपसपास मुलत: डच में लिखी गई थी।

भाषा का महत्व विशद करने वाला तीसरा कारण सरकार के रवैये का है। हिन्दी के विकास के लिए प्रशासकीय स्तर पर क्या काम हो रहा है, देखा जाये तो हिन्दी के विस्तार के लिए सरकारी स्तर पर सिर्फ खानापूर्ति हो रही है। अभितक हिन्दी भारत की राजभाषा नही बन सकी। केवल कहने के लिए हिन्दी राजभाषा है। हिन्दी भारतवर्ष का प्राण है। फिर भी उसके जीवन विस्तार को लेकर हमारे सामने अनेक प्रश्न आज भी खडे है। १४ सितंबर, १९४९ को जब हिन्दी को राजभाषा घोषित कर दिया गया तब भी यह राजकीय कामकाज की भाषा क्यों नही बन पा रही है।

कहने की कोई आवश्यकता नही कि हिन्दी के पास वह सभी कुछ है जिसके होने से कोई भाषा राष्ट्रभाषा बनकर राष्ट्रीय सम्मान अर्जित करती है। हम लोगों को पहले सरकार को मजबुर करना चाहिए की वह मौखिक रूप से हिन्दी को देश की राजभाषा न बनावे बल्कि देश की, बल्कि वास्तविक रूप में देश की राजभाषा बनाए।

निष्कर्ष :— अंत में यही कह सकते है कि किसी भी भाषा के तुलना में हिन्दी हर प्रकार से एक सशक्त और सम्पन्न भाषा हैं। हमे भारत वर्ष के विकास के लिये भारतीय संस्कृति के विकास के लिये और हमारे सांस्कृतिकम मूल्यों के विकास के लिये हिन्दी बोलने,

लिखने, पढने और इसका प्रत्येक क्षेत्र में विकास करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सुची :—

१. संस्कृति के चार अध्याय — रामधारी सिंह दिनकर

२. भाषा विज्ञान — भोलानाथ तिवारी

३. भाषा विज्ञान — उदय नारायण तिवारी

४. हिन्दी साहित्य वर्तमान दशक — प्रो. सरिता वाशिष्ठ

५. हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य — डॉ. पंडित बन्ते

६. भारत का भूमंडलीकरण — अभय कुमार दूबे

❑❑❑

25

भारतीय समाजिक चिंतन एवं संस्थायें एक समाजिकशास्त्रीय अध्ययन

DR. Anirudh Chandra Basu
Assistant Professsor,
R N Y M College Barhi, VBU Hazaribag,
Jharkhand

****

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक